# भाषाजातकालङ्कार

जिसमें

सम्पूर्ण जातक भेद वर्णित है

जिस को

लोचनसिंह उत्तम ज्योतिषी ने गुरु चरणार
विन्द के अनुग्रह से संस्कृत पुस्तक से
समस्त द्विजातियों के उपकारार्थ ॥
अति सलिल दोहा चौपाई छन्दों में

उल्थाकिया

इस पुस्तक के अभ्यास करने वाले अति
सुगमता से ज्योतिषी होजाते हैं

श्रीयुत परमोदार मुन्शी नवलकिशोरजी
ने प्रथम की अशुद्ध छपी हुई प्रति से
पण्डित प्यारेलाल और पण्डित रामरत्न से
शुद्धकराय

स्थान लखनऊ

निज यन्त्रालय में छपवाया

अप्रैल सन् १८७५ ई.

श्रीगणेशायनमः॥

प्रकट हो कि इस पुस्तक में जन्म कुंडली देखने का और शुभा शुभ फल कहने का विस्तार पूर्वक हैं

दोहे चौपाई और छन्दोंमें संपूर्ण फल कहा है। इस को पढ़ने से मनुष्य ज्योतिषी हो जाते हैं और बारह स्थानों का फल शीघ्र कह सक्ते हैं

और दोहे आदि चौपाई का अर्थ बहुत सरल है

अथ जन्म कुंडली का चक्र स्थानों के नाम
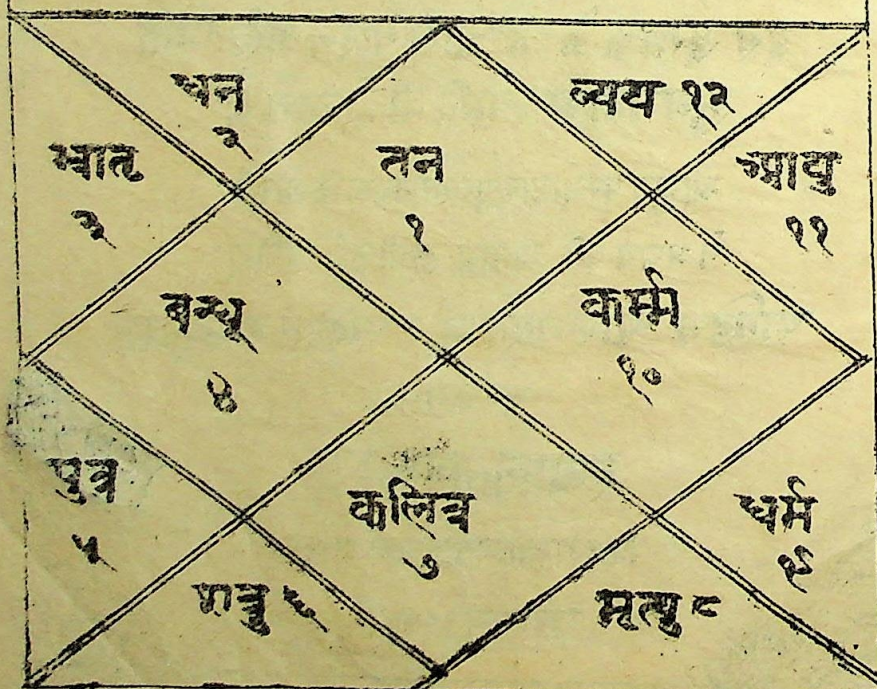
॥श्रीगणेशायनमः॥

## अथ जातका लंकार भाषा दोहे आदि चौपाई में लिखते हैं

### दोहा

वन्दो चरण सरोज युग श्रीगुरु गणपति नाथ॥ हरि हर विधि गिरिजा गिरा जोरि हाथ नय माथ॥१॥ सीतल शुभग स्वभाव शुभ द्विज कुल श्रीयुत लाल॥ तिनके सेवक अधिक प्रिय लोचन सिंह विशाल॥२॥ तिनको शुभ अस्थान प्रभु नगर राज मल दीन॥ सुख समाज कोविद कवि गुण गण गणिक प्रवीन॥३॥ श्री गुरु अनुशासन करी कृपा हृषि हृषकेतु॥ भाषा जातक कीजिये सकल जगत केहेतु॥४॥ और देव देवी सकल तिनको करौं प्रणाम॥ विमल बुद्धि वर दीजिये होयसो पूरण काम॥५॥ एक सहस्र नौ सैकड़ा संवत दस सुख धाम॥ पौष कृष्ण कुज द्वादशी रच्यौ ग्रन्थ अभिराम॥६॥

### अथ द्वादश भाव लिख्यते तत्र नाम:

तन धन भ्रात मात पुत्र शत्रु कलित्र मृत्यु कर्म।
राज्य लाभ व्यय भावके। समको पंडित मर्म॥१॥

लग्न मूर्ति तनु अंग वपु उदय कल्प पुनि आदि
॥पहिले घरके नामये जाने मिटै विषाद॥८॥
कोश अर्थ स्वकुटुंब वंधये दूजे घर केनाम॥सह
ज भ्रात दुश्चिक्य ये तीजे घरके ठाम॥९॥हिबुक
तूर्य पाताल गृह अंबा वाहन थान॥सुहृद बंध
जल नीर पै चौथे घर को जान ॥१०॥आत्मज
विद्या बुद्धि सुत बानी पंचम गेह॥अरि रिपु वैरी
द्वेष क्षत छठये घरहैं येह॥११॥मदन अस्त
पा मित्र मद द्यून कामिनी काम॥सप्तम घर के
नामये समझ लेहु गुण ग्राम॥१२॥आयु रंध्र
लय निधन पद याम्य छिद्र मृत्यु जान॥अष्ट
म घरके नामये पंडितकहैं बखान॥१३॥धर्म
नवम गुरु भाग्य शुभ तप नव घरकेनाम॥
तात आज्ञा आस्पद कर्म गगन नभ स्याम
॥१४॥व्योम नाममें स्वर्गमध्य और व्योपार
॥दशयें घरके नामये समझो पंडित सार१५॥
आयु प्रीति भव रुद्र शिव आगम शास्त्र बखा
न॥एकादश घरके नामये पंडित लीजेजा
न॥१६॥मांत अंत द्वादश रवि रिष्फ नामहे
येह॥द्वादश घरकेसे कहे समझ लेहुगुणगेह
१७॥आदि तूर्य सप्तम दशम केंद्र नाम ये चा

रि॥ पंचम नवम त्रिकोण हैं गुरुजन लेहु सम्हारि ॥१८॥ पंचम ग्रह है लाभ मृति पणफर संज्ञा जान ॥ येजु हैं आपोक्लिम पुनि पंडित कहैं बखान॥१९॥ इति पणफर आपोक्लिम स्थान निर्णय। अथ रिपु सहज ये नवम हैं ॥२०॥ द्वादश रिपु मृत्यिव कहै त्रिक १२।६।८ संज्ञा जिय जानि॥२१॥ इति संज्ञा ॥ भौम कलानिधि देवगुरु रवि के मित्र बखान ॥ चंद्र पुत्र सम भाव हैं भृगु शनि शत्रु निदान॥ २२॥ चन्द्र तनय और सूर्य ये कहे चन्द्र के मित्र॥ और ग्रह सम भाव लखि याको कोउ नहिं शत्रु॥२३॥ मंगल प्रिय रवि चंद हैं और देवपति जान॥ शनि भृगु समता जानिये वैरी बुद्ध बखानि॥२४॥ बुद्ध सनेही सूर्य भृगु शत्रु कलानिधि देखि॥ मंगल गुरु शनि सम कहे गुरजन लीजो देखि॥२५॥ रवि अंगारक चंद्रमा गुरु के मित्र कहे जु॥ शनि समता के भाव हे बुद्ध भृगु वैरी ये जु॥२६॥ चंद्रपुत्र शनि शुक्र के परम मित्र हैं मित्र॥ कुज गुरु समता जानिये सूर्य चन्द्रमा शत्रु ॥२७॥ शनि के भृगु बुध मित्र हैं गुरु सम ताको भाव॥ रवि मंगल और चन्द्रमा इनसों सदा अभाव॥२८॥ तीजे और दशवें धरे हैं चौथाई

दृष्टि॥ आधी जान त्रिकोण पर सप्तम पूरण दृष्टि॥२९
अष्टम चौथे जानिये दृष्टि तिहारी वीर॥ येही दृष्टि पद्म
चानि ये समरु लेहु मति धीर॥३०॥ कुज अरु बुध शनि
सूर्य बुध काव्य कुज गुरु शनि मानि॥ मंद बृहस्पति
लग्न पति क्रमतें तीजो जानि॥३१॥ इति श्री भाषा
जातकालंकार प्रथम संज्ञा नाम प्रथमो अध्यायः

## अथ भाषा भावाऽध्यायः

प्रथम लग्नतें फल कहौं द्वादश लौं मित्र॥ या
के समझे बुद्धि बढ़ै भ्रम न रहै तेहि चित्र॥१॥
रिपु मृत्यु द्वादश गृहमें पाप युक्ति लग्नेश॥१
जन्म समय जाके परै ताके अंगकलेश॥२॥१
पाप युक्त तन भवनमें रिपु मृत्युप के ईस॥ य-
था जोग जाके परै तन दुख विसवा बीस॥३॥
पाप ग्रह युत लग्नपति परै लग्नमें आय॥ वीर्य
हीन नर होयसो अधिक व्याधि रुज ताय॥४॥
अंगाधीश निज लग्नमें बुध गुरु रविके संग॥१
अथवा केंद्र ग्रह परैं तो जानो सुख संग॥५॥ ज-
न्म लग्नमें उच्च ग्रह जो काहू के होय॥ मित्र दृष्टि
तापर परै सर्व सुखी नर होय॥६॥ सत्व शील१
गुण रूप निधि ज्ञानी मंत्री जान॥ पुण्य धाम दी-
रघ नयन सकल गुणोंकी खान॥७॥ क्रूर ग्रह

को लग्न जो जन्म काल है जासु ॥ तासु ईश शुभ स्थान में दुष्ट कर्म है तासु ॥ ९ ॥ सूर्य कलानिधि पाप युत परै लग्न में आय ॥ अथवा सप्तम गेह जो पर नारी पर जाय ॥ ९ ॥ होय कलानिधि भोमयुत जन्म लग्न में जासु ॥ दुष्ट हठीलो अंध न न हीन जो काया तासु ॥ १० ॥ इति जन्म लग्न शुभा शुभ फलं ॥ दूजे घर को ईस जो अपने घर में होय ॥ होय बृहस्पति संग तब बहु सुख सम्पति जोय ॥ ११ ॥ अथवा ऐसो जोग करि परै केन्द्र में आय ॥ महा धनी वह होय नर आनंद सुख अधिकाय ॥ १२ ॥ जोये होय कुक गेह में करै द्रव्य को नाश वह कलेश युत होय नर रहै सदा जिय त्रास ॥ १३ ॥ दूजे द्वादश लग्न को ईस होय त्रिक गेह ॥ शुभ लग्न पति संग जो नेत्र होय रुज देह ॥ १४ ॥ पाप युक्त निसि ईस जो परै दूसरे आय ॥ लग्न पति संगी होय जो नैन हीन कहि जाय ॥ १५ ॥ इन्दु शुक्र त्रिक गेह में जन्म समय जो होय ॥ निहिं रतोंध आवै निश्चय जानो पंडित लोय ॥ १६ ॥ शुक्र अर्क युत लग्न पति त्रिक घर में जो होय ॥ जन्म अंध ये जोग है संशय यामें न कोय ॥ १७ ॥ तात मात त्रिय भ्रात सुत इन पांचन के ई-

या॥भृगुरवि सुत गेह में अंधयोग अवनीश॥ ॥१९॥चौपाई॥अबयह निश्चय करो बखानि॥लग्न तें ग्रह को स्वामी जानि॥भृगु रवि संगले त्रिकमें परे॥निश्चै अंध पिताको करे॥जो माता के घर को ईश॥भृगु रविले त्रिकमें जो दीस॥ताकी माता अन्धी जान॥पंडित जन यों करें बखान ॥२०॥सुत ग्रह स्वामी भृगुरवि संग॥त्रिक घर में जो करें प्रसंग॥उसका पुत्र आंधरो कहे॥ ये मति मंद ज्योतिष तें लहो॥२१॥भ्राता अधिपति त्रिक के गेह॥रवि भृगुले त्रिकमें जो रह ॥यह भ्राता को अन्धो जोग॥यह ज्योतिष को कहो संजोग॥२२॥त्रिय ग्रह स्वामी त्रिकमें होय॥रवि भृगु संग कहि दीनो सोइ॥निज गेह नीको अंधो जान॥पंडित जन को यही प्रमान॥२३॥दोहा॥भ्रात गेह को ईश जो भौम संग त्रिक होय॥जाके ऐसे जोग है भ्रात हीन नर सोय॥२४॥भ्रातघर को ईश जो परे लग्न में आय॥दृष्टि होय शुभ ग्रहन की भ्रात जोग अधि काय॥२५॥अथवा शुभ ग्रह संगले परे केन्द्र में आय॥भ्राता को सुख अति घनो निश्चय कहियो ताय॥२६॥पाप ग्रह जो संग लपरे

गम्य घर जाय॥ बंधु क्लेश वा मनुष को निश्चै दियो बताय॥ २७॥ भाग्य९ भाव युत होइ पुनि बली कहो तिस भाय॥ अन धन भ्राता सुख घनो पुण्य होय अधिकाय॥ चौथे घरको ईश जो गुरु संग तनु स्थान॥ राज्य पूज्य वह होय नर जानो विविधि विधान॥ २९॥ अथवा गुरु संग लाभ घर परे जो सुख पति ईश॥ गज हय पाइक अधिक ताहि देय जग दीश॥ ३०

श्रीराम दोहा श्रीराम

॥ चौथे घरको ईश जो निज घर तनु पति संग ॥ अकस्मात निश्चै मिले ग्रह आलय मन रंग ॥ ३१॥ अथवा होवे केन्द्र या तनु पति लेके साथ॥ होय नेह बहु नरन सों मिले गेह सुख साथ॥ ३२॥ धन द्वादश या दशम पति होय पाप ग्रह संग॥ जितने खोटे गिरह संग तितनी अग्नि प्रसंग॥ ३३॥ जितने पापी ग्रह जो परें सुखै घर जाय॥ दृष्टिन होय शुभ ग्रहन की तितने पशु विन साय॥ ३४॥ जितने खोटे ग्रहन की चौथे घर पर दृष्टि॥ जितने शुभ जि- न्है गिनो होय पशुन की सृष्टि॥ ३५॥ अथवा व्यय और आठवें ८ परें पाप ग्रह जाय॥ के

य नाश बहु पशुन को पंडित दियो बताय॥३६॥

॥अथ पंचम गृह फलं॥ पंचम घर को ईश जो बुध गुरु सौदे संग॥ जाय परैं त्रिक गेह में तौ विद्या को भंग॥३७॥ नवमें घर को ईश जो जो अपने घर होय॥ अथवा केन्द्र गृह परैं कौं बुद्धि बल सोय॥३८॥ बाल युवा पुनि वृद्ध जो जो जैसो घर होय॥ तातैं सोई फल कैरैं जानि लेहु सब कोय॥३९॥ पंचम घर को ईश जो देव पुरोहित होय॥ जाय परैं त्रिक गेह में वाको हीन नर सोय॥४०॥ मात पिता सुत भ्रात त्रियसु-रा चार्य होई॥ जाय परैं त्रिक सदन में वा-को हीन सब दीश॥४१॥ गृह के पंचम गेह प-ति जाय परैं त्रिक भाव॥ ऐसो जोग जु लखि परैं ताके पुत्र अभाव॥४२॥ पुत्र धर्म और लग्न पति जाय परैं त्रिक थान॥ जन्म समय या जो-गतैं सदा पुत्र की हान॥४३॥ द्वादश रिपु मृति गेह में पुत्र धर्म लग्नेश॥ होय शुभ गृह संग तु पुत्र विलंब कहेश॥४४॥ कर्क लग्न सुत गेह में होय काला निधि संग॥ बहु कन्या तहाँ जानिये अल्प पुत्र पर संग॥४५॥ गृह लैं पंच म गेह में होय पाप गृह कोय॥ अथवा गुरु

पंचम भवन निश्चय पुत्र नहोय॥४६॥सूर्य्य पुत्र घर पांचवें जन्म काल जोहोय॥एक पुत्र तहां जानिये संशय करो नकोय॥४७॥कुंभ मकर सुत गेह में अपने पति युत होय॥ पांच तहां सुत जानिये निश्चै कहिये सोय॥ ४८॥मंगल बुध भृगु चन्द्रमा इनमें कोऊ होय॥पुत्र सदन निज गेह के तीन पुत्र कहि सोय॥४९॥जाके पंचम भौन में परें बृहस्पति जाय॥जानि मीन धन लग्न बिनु एक पुत्र देताय॥५०॥मेष और वृष राशिके राहु केतु जोहोय॥पांच पुत्र ये देत हैं कर्क के लहीं सोय॥५१॥पाप ग्रह या देव गुरु सुख पंचम ग्रह देखि॥होय आठवें चन्द्रमा तीस वर्ष सुत पेखि॥५२॥जितनें खोटे ग्रह परैं पुत्र सदन में आनि॥दृष्टि नहोय शुभ ग्रहन युत सुत विलंब वहु जानि॥५३॥शंकर पूजन कोरतें बुध भृगु शशि सुत देहि यंत्र मंत्र औषधि करें सुराध्यै मति सहि॥५४॥राहु केतु कुज मंद जो पित्र पूजिये हेत॥बुध सुक्र और तप ईश जे शीघ्र पुत्र को देत॥५५॥ अथ षष्ठम ग्रह फलं॥पाप युक्त तन निधन घर परैं आय षष्टेश।

॥होयदेह में बहुत व्रणयहजानो तुम नेश॥५६॥मात भ्रातसुत तात प्रिय और मित्र सब जानि॥कहे जोपीछे योग में सबयो व्रणयह मानि॥५७॥सूर्य्य करे व्रण सीस में मुख में चन्द्र बखानि॥करे कण्ठ में भूमि सुत हृदयबुद्ध पहिचानि॥५८॥नाभि मूल में गुरु करे कटि पृष्टि भृगु मानि॥दिनकर सुत पद में कहो राहु अधर में जानि॥५९॥बुध भौमके गेह में जाय परे लग्नेश॥अथवा कुज बुध देखते नेत्र रोग कहि तेश॥६०॥छटये घरको ईश सो परे लग्न में आय॥नाश करै सब अरिन को पंडित कही जताय॥६१॥षष्ठम घरको ईश जो परे दूसरे थान॥पीड़ा दे बहु पुत्र को करै द्रव्य कीहान॥६२॥स्वामी छटये गेह को भ्राता के घर होय॥कवि जन निश्चय जानिये गेह छुड़ावे सोय॥६३॥निधन दूसर तन ईश जो जाय परे रिपु गेह॥सूलरोग अति प्रबल कर निश्चै ताकूं देह॥६४॥शुक्र होय रिपु गेह में नैन दाहिने रोग॥छटे शनि अरु देखिये पद पीड़ा को जोग॥६५॥राहु होय रिपु गेह में करे दंत को खेद॥अथवा रिपु घर केतु जो करे अधर विकलेद॥६६॥लग्न नाथ

कुज बुध भवन परे जातके आइ॥ अथवा दे
खे शत्रु घर रोग भगो दूर ताय॥ ६७॥ भौम कर
ला निधि पुत्र जो रिपु घर जानो मित॥ रोगी
वो नर जानिये समझ लेहु निश्चिंत॥ ६८॥ अ
शी क्रूर ग्रह संग जो परे शत्रु में आय॥ रोग वान
नर होय वह पंडित दियो बताय॥ ६९॥ पाप
युक्त जब चन्द्रमा परे जो लग्न स्थान॥ करे रोग
अति देह में यह याको पहि चानि॥ ७०॥ परे
केन्द्र में आयके पाप ग्रह जो कोय॥ शुभ ग्रह
जाहि न देखहीं रोगी कहिये सोय॥ ७१॥ अ
थवा भृगु को लग्न जो परे केन्द्र में आय॥ कुज
कवि गुरु देखे नहीं रोगी कहियो जाय॥ ७२॥
छठये घरको स्वामि जो परे उच्च को आय॥ पाप
ग्रह जो देखही करै शत्रु नम घाय॥ ७३॥ राहु
युक्त जो शत्रु पति जो द्वादश घर होय॥ अथवा
रवि युत पर त्रिया गमन भोग्य ब्रति सोय॥ ७४
॥ अथ सप्तम भाव फलम्॥ जितने घर ग्रह सा
तयें तितनी त्रियकी आश॥ सप्तम ग्रह परि दृ-
ष्टि तें कवि जन होय प्रकाश॥ ७५॥ दसम लग्न
से सातवें परें पाप ग्रह आन॥ दृष्टि होय दश
म को पितु बिवाह है जान॥ ७६॥ माता घरतें

सातवें परे पाप ग्रह कोय॥होय दृष्टि तृतियेश की भ्रात ब्याह कहि दोय॥७७॥होय जो ग्रह बलवानये पूरण जोग बखान।निबल होय तो फल नहीं यह पंडित पर मान॥७८॥शशी बुध्यं या भौम सुत होय सप्तमें थान॥सप्तमेश की दृष्टि पर ऐसो योग बखान॥७९॥रवि षट विधु दश सात कुज करें ब्याह को योग॥ये मति जोतिष तें कहो समझो पंडित लोग॥८०॥ जवें पांचवें केन्द्र में परे शुभ ग्रह आय॥ताको ग्रहणी होय शुभ पण्डित दई बताय॥८१॥ सप्तम घर को ईश जो सप्तमे घर में होय॥ताके त्रियातें अधिक सुख दूजो ब्याह न जोय॥८२॥ सप्तमेश तृतियेश युत परे ग्रह त्रिक आय॥ होय पाप युत शुक्र युत तितनी त्रिया नसाय॥८३॥सूर्य होयजो लग्न में त्रिया भाव शनि होय॥अथवा रवि शनि निधन घर दसम कला निधि जोय॥८४॥सुर गुरु दृष्टि न होयतो संतत बिन नर सोय॥दृष्टि जीव की भयेते ताके संतति जोय॥८५॥मित्र मन्द दूर्याहु घर सप्तम घर हो चन्द्र॥होय दृष्टि ता बुद्ध की ताके संतति वन्द्र॥८६॥चौथे पंचम षष्ट घर जो

शनि कुज जो होय॥ ताके संतत होय नहिं संत्र
ही समक मन लाय॥ ८७॥ अष्टम भाव ग्रह
फल॥ भृगु गुरु बुध और चंद्रमा अष्टम घ-
र में आय होय लग्न पति जो तहां खोटे कर्म
वताय॥ ८८॥ अष्टमेश जो लाभ घर अधिक
सुखी नर होय॥ अल्प आयु ग्रह पाप युत शु-
भ युत दीरघ जोय॥ ८९॥ अष्टमेश जो पाप
युत अरि द्वादश घर जान॥ अल्प आयुता म-
नुष की यह ताको पहिचान॥ ९०॥ अष्टमे-
श लग्नेश युत रिपु द्वादश जो होय॥ अल्प आ-
यु तहां जानिये संशय करो न कोय॥ ९१॥
अष्टमेश अष्टम भवन संग शनीचर होय॥
आयु दीर्घता मनुष की या विधि लीजो जोय
॥ ९२॥ अष्टमेश जो द्वितीय घर जो जन्म का-
ल में जासु॥ चोर कर्म में रति अधिक जग वैरी
है तासु॥ ९३॥ अष्टमेश लग्नेश दोउ रिपु अ-
ष्टम घर होय॥ बीर्य हीन जो होय तौ युद्ध परा-
जय होय॥ ९४॥ जो पै बल युत होय तौ अष्ट-
मेश लग्नेश॥ वैरिन जीते सो सदा दूर होय
जु कलेश॥ ९५॥ जो पै घर को ईश जो बुध भृगु
संग लग्नेश॥ मूर्ति लग्न में जो परै देय पाल की

येश॥९६॥तन पति राशि गुरु सूर्य पति परै ल-
ग्नमें आय।वाहन गज ताको मिलै ऐसो जोग
बताय॥९७॥अथ नवमगृहफलं॥नवयें घरको
ईश जो होय लाभ अस्थान॥दृष्टि होय सुरपू-
ज्यकी होय राज्य सनमान॥९८॥नवम सूर्य
को ईश जो परै लग्न में आय॥अथवा देखै लग्न
को सकल संपदा ताय॥९९॥चौथे घरको ईश
जो अष्टम घरमें जाय॥भाग्यहीन नर जानि
ये संपत मिलै न ताय॥१००॥चौथे घर में हीन
ग्रह परै जो ताके आय॥नष्ट सवारी जानिये
शुभ युत नीके भाय॥१०१॥नवमें घरको ईश
जो परै लाभ घर जाय॥धर्मवान युत शील न-
र रज्जा वन्दै ताय॥१०२॥धन बपु वाहन ईश१
जो अपने घरमें होय॥सिंहासन हाथी मिलै
यह तुम जानो सोय॥१०३॥नवमें घरको ईश१
जो परै लग्नमें आय॥गज रथ हय वाहन मिलै
वह सुख सम्पति पाय॥१०४॥येजु जोग ऊपर
कहे इनको यही विचार॥जब इनकी दशा१
आवही तब सुख को है सार॥१०५॥गुरु भृगु१
वाहन नाथ जो परै केन्द्र घर जाय॥अथवा प-
रै त्रिकोण में राज जोग कह जाय॥१०६॥चौ-
थे घरको ईश पुनि गुरु भृगु को लिये संग॥१

परैं सदन जो आपने देय राज सुख संग॥१०७॥
नवम ईश जो नवम घर परैं जो ताके आय॥
सुख संपति वाहन घने नर पति ताहि बलाय॥
१०८॥ अथ दशम घर फलं॥ मंगल दशवें घर
परै करै है तब को शोक॥ अथवा त्रिक घर में
परैं करै सुतन को शोक॥१०९॥ परै गुरू जो त्रिक
भवन यह वाहन को शोच॥ भूषन बसन जो
नहिं मिलें रहै सदा संकोच॥११०॥ होय कर्मा
निधि त्रिक भवन जन्म समय जो तास॥ च-
मर छत्र चिन्ता करैं सबै अरिलैं बास॥१११॥
होय बाग गुरु पति मदन चिन्ता सुत की देय
॥ बुद्ध होय जो तनय घर बहुत शोच तन होय
॥११२॥ रवि त्रिकोण जो जायई तात बंधु को
शोक॥ ऐसो जोग जो लखि परै सुख को लहैन
शोक॥११३॥ नवम पंच घर सातवें देत पुरो-
हित होय॥ या वाकी चिंता करै समझ लेहु स-
ब कोय॥११४॥ नवम पंचम गेह में होय ब्र-
हस्पति जासु॥ पुत्र सोच नित ही रहै ऐसे
कहिये तासु॥११५॥ धर्म धीश बल हीन जो
सकल वस्तु की हानि॥ अथवा छठवें भुवन
से हानि करै शील सुख खानि॥११६॥ अ-
थ एका दश गेह फलम्॥ केन्द्र लाभ त्रिको

श्च घर नभ १० लग्न १ मृतिके ईश॥ इन योगन के योग तें दीर्घ आयु कहि दीश॥११७॥ फश पर १।५।८।११॥ चौथे तीसरे परै प. प ग्रह जासु॥ मध्य म २२ आयु ताकी कहो और अधिक नहिं आसु॥११८॥ आपोक्लिमें पाप ग्रह परैं लग्न १ के आनि॥ हीन आयुता की कही ज्योतिष मत पहि चानि॥११९॥ तन पति नभ पति सूर्य्य युत परै रंध्र अस्थान॥ हानि होय इन ग्रहन में तासम आयु बखान॥१२०॥ धर्म कर्म और १ आत्मजा इन इन घर के ईश॥ अपने घर परै दीर्घ आयु कहि दीश॥१२१॥ निधन ८ ईस १ तन ईश जो लिये शनि आर संग॥ परै आय १ अरि गेह में करै आयु को भंग॥१२२॥ अष्ट मेश लग्नेश जो राहु केतु के संग॥ अरि घर अपनी दिशा में हरै करि तन को भंग॥१२३॥ वाह २ नेश ४ रिपु गेह में परै जन्म के काल॥ वाहन तें मृतु तास की समझो बुद्धि विशाल॥१२४॥ २ नवमें घर को ईश जो परै शत्रु घर जाय॥ चौर शत्रु ते भय करै मध्यम भाग बताय॥१२५॥ २ व्योम गेह को ईश जो अरि घर करै प्रकाश॥ भूषन बसन शुभ कर्म की चिंता व्यापै तास॥१२६॥

॥लाभ नाथ अरि सदन में जोपै तौहि दिखाय।
सर्वस चिंता तासुको पंडित दिये बताय॥१२७
॥अष्टम मेश व्यय ईश जब अरि घर करै पयान
॥भय पापन ह्वै अति करै पहली जो सुभ जान
॥१२८॥अथ द्वादश ग्रह फलं॥द्वादश घरको
ईश जो जन्म लग्न में होय॥रूप वान सुन्दर
वचन संसय करोन कोय॥१२९॥बारहैं घरको ईश ज-
व द्वादश घरमें होय॥नाम युक्त बहु पसु तहां लोभी
जानें सोय॥१३०॥अथवा नवमें घर परै जो द्वादश
को ईश॥करै बहुत तीरथ गमन सभी नवावैं शीस
॥१३१॥द्वादश घरको ईश जो लिये पाप ग्रह संग॥
धर्म स्थान में जो परै पापके करता टंग॥१३२॥मि-
थ्या बोलै अति घनो रहै शोक मन मांहि॥ऐसो जोग
विचार कह्यामें संशय नांहि॥१३३॥इति श्री भाषा
जातका लंकारे द्वितीयो ऽध्यायः॥२॥धर्म भवन
सुत भवन में छीन होय राशीश॥क्रोधवंत नर होय
सो जानो विस्वबीश॥१॥रिपु मृत द्वादश ग्रह में लग्न
नाथ राशीस॥ऐसो जोग जो लखि परै दुर्बल वच
न कहीस॥२॥पाप ग्रह को संग ले धर्म देव भृत
नाथ॥चाहिये ता घर में परै रहैन गृहिणी साथ॥३
॥धर्म देव सुत नाथ पर होय पाप ग्रह दृष्टि॥ग्रह

हीन निश्चय जानियो ताकी लहरगा भ्रष्ट॥४॥ सप्तमेश षष्ठेश जो कुज बुध युत सुख गेह॥ सो नर नहिं निज तातैं निश्चय कहो जु एह॥५॥ धर्म नाथ अरि नाथ दोउ चाहैं ताघर होय॥ पाप युक्ति जो होय तौ निज पितु ते नहिं सोय॥६॥ धर्म नाथ रिपु नाथ वो होय प्रानी पर संग॥ शूद्र जातितैं तासु को जन्म जानि पर संग॥७॥ अथवा बुध युत तौ वैश्य जाति ते मानि॥ रवि युत क्षत्री तें कहो भृगुगुरु तें द्विज मानि॥८॥ राहु केतु युत होय तौ ऐसो योग बखानि॥ अंत्यज तें ताको जन्म है यह लीजो पहिचानि॥९॥ पाप युक्त भृगुगुरु दोऊ जिय धन रिपु के गेह॥ तासु पुरुष को जानिये पर नारी सह नेह॥१०॥ षट् दशवें को ईश दोऊ दशवें घर में जाय॥ पर त्रिय गामी तासु पित ज्योतिष कहो सुनाय॥११॥ लग्न ईश होय पाप युत जाय दूसरे थान॥ ऊंच जाति की त्रिया संग तासु पिता रति जानि॥१२॥ सप्तम अरि धन गेह को ईश होय धन गेह॥ पाप युक्त पित तासु को पर नारी सों नेह॥१३॥ तृतिये सप्तम लग्न गगन के ईश लग्न पति संग॥ चाहे काहू घर परे अन्य जन्म पर संग॥१४॥ इति व्यभिचार योगाः॥ लग्न ईश बुध कुज शशी ये चारों कर्क जानि॥ अथवा क्रूर हो राहु तो स्वेत कुष्ठ की खानि॥१५॥ रवि शशि कुज

युत होय जो परै काहू अस्थान ॥ रक्त कुष्ठ ता मनुज
को निश्चै ही जो जान ॥ १६ ॥ परै जाय त्रिक भवन में
लग्न नाथ रवि संग ॥ ताप गंड के रोग तें करै देह को
भंग ॥ १७ ॥ अथवा त्रिक घर में परै लग्न धीश शशि
साथ ॥ जलज गंड को रोग तहं ज्योतिष मत की गाथ ॥
१८ ॥ भूमि तनय लग्नेश त्रिक करै पित्त को रोग ॥ बुध
युत त्रिक लग्नेश तैं श्याम वात को योग ॥ १९ ॥ भृगु
लग्न पति गेह त्रिक लहै रोग उपजाय ॥ ज्योतिष के
अभ्यास तें देख लेहु बुध ताहि ॥ २० ॥ अष्टमेश के
संग जो थल तम शिखि वह होय ॥ अन्त्यज तें और
चोर तें अति भय ताको होय ॥ २१ ॥ चंद्र मेष वृष रा
शि में शनि कुज लीये संग ॥ श्वेत कुष्ठ या योग तैं बा
हु दोनों पर संग ॥ २२ ॥ भृगु कुज शनि शशि संग लख
सिंह धनु अलि जान ॥ परम कुकर्मी होय नर रक्त
कुष्ठ की खान ॥ २३ ॥ सुरगुरु भृगु रिपु नाथ जो क
र चह लिये संग ॥ जन्म लग्न में आ परै रक्त कुष्ठ पर से
ग ॥ २४ ॥ अथवा क्रूर जो नग्रहन की दृष्टि लीजिये देखि
कैसो जोग जो लहु परै कुष्ठ रोग है पेखि ॥ २५ ॥ मीन क
र्क अलि लग्न में परै पाप ग्रह आय ॥ तुला कुम्भ होय
नर वह लौं जो पहिचान ॥ २६ ॥ द्वादश घर ही जीव जो
युत रोग दो जानसु ॥ रिपु द्वादश घर भौम शनि कुरा रोगी

कहो तासु॥२७॥मेष मीन जल नवाइ आलि इनपै जो शनि चंद्रकुर ग्रह नव भवन में संज्ञ रोग होय मंद॥२८॥पैरे लग्न में आय कर सौम प्राणिष्या गानि॥पूरण देखे भौम मल बुध हीन कहि जानि॥२९॥सूर्य चंद्र के बीचमें पैरे भूमि सुत जासु॥बुद्धि हीन नर सो कहो ज्योतिष दियो पताय॥३०॥चंद्र होय जो तन भवन गगन सदन होय मन्द॥मन्द उच्च सद ग्रह को करे बुद्धि आनंद॥३१॥होय लग्न में मीन पति बुध शशि पूरण दृष्ट॥बुद्धि मान नर होय सो जोतिषको यह इष्ट॥३२॥राशि अंगारक लग्न में बुध की दृष्टि बखानि॥बुद्धि हीन नर जानियो महा दुःखकी खानि॥३३॥लग्न पति शशि युत लग्न में होय भूमि सुत संग॥अथवा कुज की दृष्टि तें होय बुद्धि को भंग॥३४॥पैरे बुद्धि स्न भवन में रवि शनि रिपु अस्थान॥दृष्टि होय रवि सूर्य पर खल ग्रह की मति हान॥३५॥सिंह लग्न अरि भवन में तासु ईश सुख गेह॥खल युत शुभ की दृष्टि नहिं करें बुद्धि की खेह॥३६॥शनि गुरु चौथे भवन में जन्म समय जो होय॥निश्चै कर तासों कहो बुद्धि हीन नर सोय॥३७॥कुज शनि गुरु ये बन्धु पर पापयुक्ति दर साय॥हृदय रोग व्रण रोग जे करें क्लेश बहु ता-

व ॥३८॥ राहु सूर्य्य बुध पांचवें चौथे भौम बखान ॥ १२
परै आठवें सूर्य्य युत जन्म दरिद्री जान ॥३९॥ मेष राशि
अलि राशि के भौम सातवें थान ॥ सो नर कातर जानि-
ये जोतिष कियो बखान ॥ अथवा शनि नवम घर परै ज-
न्म राशि होय ॥ जोतिष के मत से कही कातर है नर
सोय ॥४०॥ मंगल मूरति में परै रवि स्वजन विरोध ॥
सप्तम घर जो भौम सुत हट शरीर को बोध ॥४१॥ चा-
है अरि शय युद्ध को तीनों कठिन शुभाव ॥ होय अनी-
ती क्रोध बहु सबको करै अभाव ॥४२॥ बुध देखै जो भौ-
म को पूरण दृष्टि निहार ॥ ऐसे देखे भौम बुध दीरघ तन
विस्तार ॥४३॥ रवि शनि कुज इन ग्रहन की होय चन्द्र
पर दृष्टि ॥ सीतल शुभग स्वभाव मृदु करै बड़ाई सृष्टि
॥४४॥ होय चन्द्रमा हीन जो शनि पुत्र लिये संग ॥ पा-
प राशि पै जो परै सो नर चुगलि प्र[illegible]संग ॥४५॥ मूरति
में हो चन्द्र सुत सप्तम होय जो जीव ॥ सो दारा चित औ-
र चुगल नर जान लेहु मति सीव ॥४६॥ बुध मंगल शु-
भ राशि में परै जु ताके आय ॥ करै मसखरी नरन सों
नित लज्जा कहि ताय ॥४७॥ कुज बुध शनि की राशि
पै होय अर्क की दृष्टि ॥ सभा चतुर नर जानिये नृप
पूर[illegible]ता स्पष्टि ॥४८॥ होय चन्द्रमा त्रिक भवन करै
शुक्र पर दृष्टि ॥ सो नर बहुभी जानिये होय महा मत भ्र-

षि॥५०॥ मंगल बुध और चन्द्रको देखे ग्रह बलवान ॥ चतुर विचक्षरा होय नर होय सदा सन्मान ॥५१॥ शुक्र बुध घर सातवें अथवा नभ ७ मांत होय॥ कामी सो नर जानिये समझलेहु सब कोय॥५२॥ नभ १ सप्तम ७ घर कुज कवि कुज बाँधे नभ १० सख धान ॥ अतिकामी नर जानिये गवन करै पर बाम॥५३॥ होय चंद्रतें दशम भृगु शनितें चौथे जानि॥ बहु कामी नर जगतमें सो तुम जानो मानि॥५४॥ भृगु बुध श-नि नभ सातवें कामी सो नर जानि॥ तुल वृषको जो हो-य भृगु दिन भोगी यहि चानि॥५५॥ होय चन्द्रतें आन शनि अथवा भृगुत होय॥ अजसी नर वह जगतमें १ जानि लेहु सब कोय॥५६॥ तोम शुक्र जो मूर्तिमें देखे कुज कोदृष्टि॥ सो इन्द्री खंडित करै जानो बीसवें बीस-॥५७॥ होय लग्नमें सूर्य्यसुत सूरजहीके संग ॥ अथ-वा देखे सूर्य्यको करै लिंग को भंग॥५८॥ सूर्य्य होय उपग्र-ग युत विधु भृगु हो दृष्टि॥ गुरजन जानो सो मनुज करै लिंगको भ्रष्टि॥५९॥ वक्री ग्रहकी राशि पर देखे सूर्य्य जो होय॥ यही नपुंसक योग है जानि लेहु सब कोय॥ ६०॥ लग्न नाथ जो लग्न घर अपने घरको होय॥ पड़े शुक्र जो तामें होय नपुंसक सोय॥६१॥ कुजतें न-भ सुख भवनमें शनि राशि पैं जु आय॥६२॥ ज्यो-

तिष मत को देखिके कहो नपुंसक ताय॥ ६२॥ मंगल कर संयुक्त जो छठये घर भृगु होय॥ कामी नरये जानिये जानिलेहु सब कोय॥ ६३॥ कुल वृष मिथुन जो राशिपै असुर पिरोहित होय॥ जाके ऐसो जोगहो अति कामी नर होय॥ ६४॥ जन्म लग्न में वृष धनु तहां शनी जो होय॥ लघु कामी सो जानिये संशय करोन कोय॥ ६५॥ परै शनी चर मकर को बोले वचन प्रमान॥ शील वान सांचो निपट करैं सबै सन मान॥ ६६॥ शत्रु नाथ अरु चन्द्रमा हृदय अर्ध में होय॥ पाप युक्त देखे न शुभ कुण्डली नैनन जोय॥ ६७॥ छीन होयजो चन्द्रमा भृगु शनि लखे न ताहि॥ लघु नैना ता पुरुष के रे यामें भ्रम हत नाहि॥ ६८॥ कर्क राशि को चन्द्रमा नभ स्थित्र घर होय॥ पाप ग्रह जो देखते लघु नैना सो जोय॥ ६९॥ परै लगन में चन्द्र कुज भृगु गुरु पूरण दृष्टि॥ ता नर को तुम जानियो एक नेत्र है भृष्टि॥ ७०॥ रवितें कुज रहे अगम गति जानि मोतिया बिंद॥ अथवा बुध हो अगम गति कुण्डली हो की धुंध॥ ७१॥ जन्म लगन मृति लग्न में परै दैत्य ग्रह आय॥ क्रूर तिनै जो देखही नैन नीर वह ताय॥ ७२॥ एक रासि कुज चन्द्रमा करै नेत्र में फूल॥ पाप ग्रह जब देखही यामें नहिं कुछ भूल ॥ ७३॥ धर्म पुत्र और द्वादशे सूर्य्य परै जब आय॥ द-

ष्टि करै बलवान ग्रह कहो हठीलो ताय॥७४॥ अथवा शनि नव पांचवें जो द्वादश घर जाय॥ विकल नैनता पुरुष के अधिक व्याधि दृग ताय॥७५॥ पृष्ठोदय की राशि शशि शनि चौथे घर होय॥ शनि देखे परि चंद्र को बौना कहि नर सोय॥७६॥ मेष राशि के बीच में जाय पैरै लग्नेश॥ वामन सो नर जानिये कछु मत करो अंदेश॥७७॥ कुंभ मीन को चंद्रमा परै जु धन अस्थान॥ जाके संग जो सूर्य युत होय दाद तहं मान॥ अथवा सूरज पुत्र जो परै लग्न में वीर॥ कछू दाद तहं जानिये समुझि लेहु मतिधीर॥७९॥ चन्द्र परै रिपु गेह में को ऊन देखे ताहि प्लीह रोग ता मनुष को या में संशय नाहि॥८०॥ अंश नाथ त्रिय जो रवि सुत लीये संग॥ सिंह राशि के होय जो कैरैं प्लीह दृग भंग॥८१॥ लग्न नाथ दिनकर तनय इनको देखे क्रूर॥ सदा दुखी नर होयगो सुख भोजन तें दूर॥८२॥ परै क्रूर ग्रह केंद्र में सर्प विकार नर सोय॥ सूर्य चन्द्रमा केन्द्र में तहां विकल मत जोय॥८३॥ शुक्र परै जो लग्न में सप्तम शनि जो होय॥ कुबेरा कटि दुख तासु को जानि लेहु गुण सोय॥८४॥ काव्य होय पाताल ग्रह गुरु शनि युत कहु होय॥ शुक्र युत कुज वा बुध कहूं कटि कर पद दुख सोया॥८५॥ अष्टमेश नवमेश जो परै पाप ग्रह संग॥ पा-

परमहतें सुख भवनकौं जंघ मे भंग॥८६॥ परै सूर्य जो अरि भवन राहु शनी घर साथ॥ जंघ रोग ता मनुष को जानि लेहु यह गाथ॥८७॥ शनी राहु पति द्वादशे होय क्रूर ग्रह दृष्टि॥ यह निश्चै करि जानियो कौं जंघको भृष्ट॥८८॥ रवि बुध शनि मूर्ति शत्रु ग्रह परै शत्रु को आय॥ पीड़ा होय शरीर मे निश्चय कहूं जताय॥८९॥ शनि भृगु दशवें घर परैं यही नपुंसक योग॥ भृगुनें शनि अरि द्वादशें होय नपुंसक लोग॥९०॥ सिंह राशि पै चन्द्रमा तातें सप्तम भूमसुत कहूं नपुंसक जोग यह समझो पंडित बूम॥९१॥ कर्क राशि के सूर्य्य तें कुज सप्तम घर होय॥ ऐसो जोग जो लखि परै क्लीव पुरुष है सोय॥९२॥ मेष सिंह अलि मकर में होय भाग्य को ईश॥ यही नपुंसक योग है जानों बिसबा बीस॥९३॥ आयु सम देखे रवि चन्द॥ अथवा देखे बुध औ रमन्द। सम घर में जो सूरज होय॥ ताको भृसुत देखे जोय॥ मेष जन्म तहं होय जो चन्द॥ ऊन राशि अन्य ग्रह चन्द॥ पूर्ति राशि वृद्ध शशि होय इनके देखे मंगल जोय॥ मानुष राशि जन्म के थान॥ हिम कर शुक्र तहं ले जान॥ ये षट् योग नपुंसक के है॥ देख ग्रन्थ ज्योतिष तें लहे॥ जुदे जुदे क्रम इनको जानें॥ तनक भ्रमन तेहि चित तें आनें॥९७॥ परै मूर्ति घर भौम भृगु ताको क-

र छुटि जाय॥ बात कोप तें जानियो कही बात सम ताप॥
॥९८॥ मंगल ली या मेष में होय शुक्र लिये संग॥ बातको-
प तें जानियो करै वृषन को भंग॥९९॥ भौम राशि पर
चन्द्रमा भृगुहू परे जो आय॥ सूर गुरु शनि की दृष्टि तें
वृषण वृद्धि अधि काय॥१००॥ क्रूर ग्रह जो लग्न में दृष्टि
जहां अधिकाय॥ दंत रोग ता पुरुष को निश्चै दियो ब
ताय॥ मेष सिंह धन और वृष इनको देखे क्रूर॥ गंज
योग यासों कहें बाल होय हैं दूर॥१०१॥ नवमें दूजे द्वादशे
और पांचवें थान॥ इनमें क्रूर ग्रह परे बन्धन योग बखा
न॥१०३ मेष चाप वृष लग्न में इनमें जन्म जु होय॥ ता
नरकी मुस्कें बन्धें संशय करो न कोय॥१०४॥ परे चन्द्र
मा ग्रह दैत्य गुरु बाल गंध कहि ताय॥ शत्रु दृष्टि बुध भ
वन में बगल रोग कहि जाय॥१०५॥ शत्रु नाथ जो मकर
में ऐसो परे लखाय॥ होय बसाली देह सब याहि दीजे स
मझाय॥१०६॥ बुध संग भृगु और केन्द्र में जो काहू के होय॥
बालांध पुनि जानियो संशय करो न कोय॥१०७॥ भृगु रा
नि अपनी हृदय में होय मेष को चंद॥ परे लग्न में रैन प-
ति करै घास मुख बन्द॥१०८॥ इति श्री जातकालंकारे
भाषा योगाऽध्यायः तृतीयः॥३॥ अथ वैधव्य योगः॥ र
विवारी द्वितिया जो होय॥ श्लेषा ताही दिन में जोय॥ कृ-
त्तिका होय शनिश्चर वार॥ सोतें तिथि को करो विचार॥ हो-

य शतभिषा मंगल वार॥कही द्वादशी तिथि निरधार॥इन
योगन में कन्या होय॥निश्चय विधवा जानों सोय॥जन्म
लग्न है शुभ ग्रह होय॥एक पाप ग्रह नभ में जोय॥शत्रु
क्षेत्र में है ग्रह मानों॥ताकन्या को विधवा जानों॥श्लेषा
कृत्तिका का होय॥मंद वार युत लीजो जोय॥पैरे शतभिषा
मंगल वार॥सातें तिथि लीजो निरधार॥रवि वार द्वादशी
जो होय॥नक्षत्र विशाषा जानो सोय॥ऐसो जोग जो जाके परै
तो कन्या को विधवा करै॥धर्म सदन में भौम रत जन्म
सदन शनि जानि॥सूर्य्ये होय सुत सदन में कन्या विध-
वा मानि॥६॥जन्म लग्न या चन्द्र तें शुभ ग्रह सप्तम हो-
य॥अथवा सप्तम लग्न पति विधवा कन्या सोय॥७॥२
जितने विधवा के कहे दोष ज्योतिष देषि॥पुत्र जोग जो
होय नहिं तो विधवा नहिं पेषि॥८॥जानें विधवा जोग
जो तौ ब्याह जतन कराय॥शुभ ग्रह चन्द्र लग्न में भाव
र देहि डराय॥९॥सुन्दर शुभ ग्रह लग्न सों विधवा दोष
मिट जाय॥यातें बुधजन समझ के शुभ में ब्याह कराय
॥१०॥इति श्री भाषा जातकालंकारे चतुर्थो ऽध्यायः ४
॥भानु मूल या जगत में नर जीवन के काज॥जैसें निर
जिय जीव को अमृत सकल समाज॥१॥अथ आयु नाम
उमर के जोग अब लिखते हैं॥तातें अब मैं कहत हों आ-
युदा को योग॥राम भजन और सर्व सुख होय सदा सुख

मांग॥२॥लग्न थोरा हो वीर्य्ययुत केन्द्र शुभ ग्रह लाय॥
देखे अपनी दृष्टि कर दीर्घ आयु बताय॥३॥सौम ग्रह नि-
ज क्षेत्र में जन्म लग्न शशि उच्च॥लग्न नाथ बल वीर्य्य यु-
त आयु साठ की सुच्च॥४॥परै केन्द्र में सौम्य ग्रह जन्म ल-
ग्न गुरु आहि॥चन्द्र दृष्टि अष्टम भवन क्रूर न देखे ता-
हि॥५॥अथवा कोऊ क्रूर ग्रह अष्टम घर नहिं होय॥आ-
यु होय ता मनुज की सत्तर वर्ष जु सोय॥६॥शुभ ग्रह व-
ल त्रिकोण में उच्च वृह स्पति जानि॥होय वीर्य्य युत ल-
ग्न पति नभ वसु आयु बखानि॥७॥परै केन्द्र में चंद्र
मुल अपने घर को आय॥छेद हीन जो निधन घर ती-
स वर्ष कहि ताय॥८॥दसवें घर में चन्द्रमा होय बुद्ध
जो संग॥अथवा देखे वृद्ध जो तीस वरस पर संग॥९॥
सुर गुरु निज जन वास में या निज ग्रह में होय॥जन्म ल-
ग्न में जो परै नख २० प्रमाण की सोय॥१०॥सौम्य ग्रह
त्रिकोण में कर्क चंद्र वपु पान॥होय शुभ ग्रह द्यून घर
७ साठ वरस पर मान॥११॥कीट लग्न के देव गुरु परैं
लग्न में आय॥जहां जोग ऐसो परै अस्सी वर्ष बताय
॥१२॥परै लग्न १ या धर्म ९ में अष्टम घर को ईश॥ल-
ग्न नाथ होय मिरत घर देखे क्रूर ग्रहीस॥१३॥आयु
कहौं ता पुरुष की जोतिष के परिमान॥जानलेहु चौ-
बीस की जानो आयु प्रमान॥१४॥लग्न नाथ मृति ना-

घ देउ होय अष्ट में पाव वीस बरस और सात की जानो आयु प्रमान॥२५॥गुरु पाप ग्रह लग्न में होय चंद्र की दृष्टि॥अष्टम कोऊ होय नहिं वीस युगल को सृष्टि॥२६॥लग्न और निसि नाथ देउ होय क्रूर नहिं संग॥जन्म लग्न में देव गुरु मृति घर जानो भंग॥२७॥परे सौम्य ग्रह केन्द्र में सत्तर आयु प्रमान॥देखि लेहु याये गते बुध जन लीजो जान॥२८॥खवसद दून स्थान में सुर गुरु कवि देउ जान॥आयु जानि सत वर्ष की ज्योतिष के परि मान॥२९॥होय वृहस्पति कर्क की परै केन्द्र में पुनि आन॥तहां आयु शत वरस की यह तुम लीजो २ जान॥२०॥धर्म ९ अंग १ दून सदन में अर्क पुत्र जो होव॥परै चन्द्रमा व्यय १२ नवम आयु वर्ष शत जोय॥ २१॥धी केन्द्र मृति नव भवन खल खचला नहिं होय॥जन्म होय धन मीन में केन्द्र काव्य गुरु जोय॥२२॥अष्टम नव दून धरन को शुभ ग्रह लखे निहार॥आयु होय शत वर्ष की बुध जन लेहु विचार॥२३॥अंग भवन और चन्द्र तें अष्टम परै न कोय॥शुक्र वृहस्पति वीर्य युत पूर्ण आयु कहि सोय॥२४॥सौम्य गगन चर २ निज भवन परै उच्च शनि ईस॥आयु साठ हो वर्ष को २ जानो बिसवे बीस॥जन्म होय धन लग्न में आधी जानय व्यतीत॥वृष भ राशि में जे देऊ चंद्र पुत्र पति सीत

॥२६॥ औार जु वाकी ग्रह रहैं पै उच्च के थान॥ अथवा निज निज भवन के आयु वर्ष शत १०० मान॥ २७॥ पै केन्द्र में शुक्र गुरु चन्द्र लाभ घर होय॥ पूर्ण आयुता पुरुष की जानि लेहु सब कोय॥ २८॥ शुक्र नीच को लग्न मे अथवा अष्टम होय॥ शुभ ग्रह दृष्टि जो चन्द्र पै जीव केन्द्र में सोय॥ २९॥ ऐसा जोग जब आवई पूरण आयु बताय॥ ज्योतिष ते यह मत लिखो यामें संशय नाय॥ ३०॥ लग्न नाथ अष्टम घर जाय॥ गगन चन्द्रमा दियो बताय॥ और देव गुरु बल युत देखि॥ और सकल ग्रह नवमें पेखि॥ ३१॥ ऐसो जोग जहां लखि पावै॥ आयु बरस शत तहां बतावै॥ लग्न कर्क को जाहां बखानि॥ चन्द जीव तहां बैठे जानि॥ ३२॥ लाभ शत्रु घर भ्राता जानि॥ चन्द्र पुत्र कवि बैठे आनि॥ अथवा बुध कवि के अस्थान॥ तकी आयु वर्ष शत जान॥ ३३॥ होय केन्द्र में रवि शनि मंद॥ निज नवांस गुरु आनंद कंद॥ ऐसे गुरु जन्म अस्थान॥ अन्य खेट अरि भवन बखान॥ ३४॥ ताके ऐसो र योग बखान॥ अस्सी पांच की आयू जान॥ शुभ नवांश क्रूर ग्रह होय॥ पै जाय उपचय घर ३।६।१०।११॥ सोय॥ पै केन्द्र में शुभ ग्रह आवै॥ तकी आयू पूर्ण बताव॥ ३५॥ दोहा॥ होय लग्न पति भौम युत पै रंध्र

अस्थान॥ऐसे जोगसे ज्योतिषी पोरी आयु वखान॥
३६॥पेरे केन्द्र लग्नेश गुरु केन्द्र क्रूर नहिं होय॥नव
मृति पंचम पाप विन पूरण आयु जो सोय॥३७॥पा
प छेदै धन कर्क केजीव भाग शुभ आय॥पूर्ण २
आयु ता पुरुष की निश्चै देय बताय॥३८॥द्वादश दू
जे ग्रेह शुभ मिथुन नवांशक होय॥पूर्ण होय शशि
लग्नमें परम आयु है सोय॥३९॥परै लग्न मैं लग्न प
ति शुभ ग्रह तीसे संग॥रंध्र लग्न में रंध्र पति वीर्य्य ही
न परसंग॥४०॥बीस वर्ष की आयु तहं जानिलेहु बुध
वान॥आयुर्दी के जोग को ज्योतिष कियो बखान॥
४१॥अष्टमेश जो केन्द्र में होय जो वल कर हीन॥तथा
लग्न पति हीन वल तीस वरस कहि दीन॥४२॥इन्दु
होय आपीक्लम लग्नु पति वल कर हीन॥पाप दृष्टि हो
य लग्न में पेहा बिंशति कह दीन॥४३॥पाप लग्न होय
जन्म की ता अस्थान दिनेश॥तीस वरस की आयु तिहि
कहु मति जान विशेष॥४४॥सुर गुरु द्वादश केन्द्र में
पाप युक्त लग्नेश॥अरि भ्राता नव घर परैं तीन वर्ष न
हिं शेष॥४५॥कर्क लग्न में कुज शशी रंध्र केन्द्र विन
जानि॥तीन वर्ष की आयु तहं ज्योतिष कही वखानि
॥४६॥अष्टमेश हो लग्न में मृति में शुभ नहिं होय॥वा
ही वर्ष चालीस की उमर जानि ले सोय॥४७॥लग्न

ईश जो रंध्र में जन्म लग्न पति ईश॥ पांच वरष की आयु को ताहि देय ज्ञगदीश॥४८॥ होय मकर को मंद रवि परै भात अरि गेह॥ रंध्र नाथ हो केंद्र में वेद वेद ४४ लौं देह॥४९॥ शुभ नवांश में सौम्य खग आयु वरष है तीस॥ ऐसे योग ते वृद्धि वर जानों विसवा वीस॥५०॥ अंग नाथ को देखे ग्रह क्रूर॥ होय शुभ ग्रह अति वल भूर॥ सौम्य नवांशक में शशि होय॥ वर्ष तिहत्तर ७३ आयु जो होय॥५१॥ निशा नाथ तें अष्टम थान॥ परैं २ पाप ग्रह पहिले जान॥ मध्यम आयु तहां पहिचानों॥ यामें संशय कछून जानें॥ द्वितीय भाव में होय शनि जन्म लग्न में जोय॥ रंध्र नाथ व्यय नाथ जो वलकार हीन जो सोय॥ ऐसे योगमें ज्योतिषी पच पन वर्ष प्रमान॥ कही आयु जोतिष मते सो लीजो पहिचान॥५४॥ कर्क लग्न के सूर्य्य हों पाप युक्त वपु थान॥ गगन चन्द्र गुरु कन्द्र में पचपन वर्ष वखान॥५५॥ वुद्ध परे सुख गगन ग्रह व्यय १२ मृति चंद वखान॥ जन्म लग्न कवि गुरु परे आयु अर्द्ध प्रत जान॥५६॥ चंद्र परै लग्नेश युत त्रिक ग्रह के अस्थान॥ लग्न २ नाथ शनि भाव में वल सत आयु वखान॥५७॥ शुभ ग्रह होयन मृत्यु घर लग्न नाथ त्रिक थान॥ लग्न २ नाथ हो पाप युत साठ वर्ष परि मान॥५८॥ लग्न ना-

घ राशिश होऊ रवि युतअष्टम गेह॥गुरुकेन्द्र में होय नहिं साठ वर्षकहि तेह॥५९॥अंगलग्न में दिवसप ति निजअरिकुज युत जानि॥हीन गुरु शशि अय १२ निधन सत्तर ७० वर्ष प्रमान॥६०॥धर्म भवन में सकल ग्रह जो काहू के देख॥पंडित जन यों भाष ही पूरण आयु विशेष॥६१॥निज नवांश के पापग्रह परें केन्द्र अस्थान॥अस्सी ८० वर्षकी आवल परि हितलीजो जान॥६२॥निज नवांशमें क्रूर ग्रह निज नवांश शुभ जा व॥बलयुत होयलग्नेश जो पूरण आयु बखान॥६३॥पुत्र भवन में सकल ग्रह परें एक संग आय॥६०साठ बरसकी आवल पंडित दई ब-ताय॥६४॥जन्म होय धन अंत में होयजो शुभ ग्रह संग॥आदि भाग में केन्द्र शुभ पूरव आयु प्रसंग॥६५॥वसु ८ भ्राता ३ सुख ४ भवन में सकल खेटजो दीख यातें निश्चै जानि यों पूरण आयु सुपेषि॥६६॥जन्म लग्न याचन्द्र तें रिक्त केन्द्र मति ईश॥वर्ष बीस अरु साठकी आयु कही जगदीश॥६७॥होयन शुभ ग्रह केन्द्र में मृतिघर कोई होय॥तीस वर्ष की आर वल जानि लेहु सव कोय॥६८॥होय चन्द्रमा जापे छीन पाप ग्रह मति बल कह दीन॥मृत्यु नाथ केंद्र ग्रह होय लग्न नाथ निर्बल अति जोय॥ऐसा जोग जहां लखि

भाई॥ बीस बरस की आयु कहाई॥ ७०॥ आपोक्लिमें-
शुभ ग्रह होय॥ मृति अरि ग्रह शनी शशि होय॥ ग्या-
रह वर्ष आयु कहि देई॥ ज्योतिष तें जानें मन मांहि॥
७१॥ परै द्वादशे मृति धन दूश॥ पाप खेट युत जो तहं-
दीश॥ तहां राहु नहिं होय निदान॥ तहां शशी ना परै
पयान॥ ७२॥ ऐसो जोग तहां तुम जानें॥ बीस वर्ष-
की आयु बखानें॥ होय केन्द्र में रवि शनि दोऊ॥ ज-
न्मलग्न में कुज को जोऊ॥ ७३॥ बीस वर्ष की आयु
बखानी॥ समझ लेहु नर पण्डित ज्ञानी॥ सुर गुरु भृगु-
जे तन अस्थान॥ सूरज पाप युक्त तहं जान॥ ७४॥ सू-
तम ताकी आयु बखानै॥ पंडित जन तुम करै प्रमा-
णै॥ राशि दूश जो तन अस्थान, ताके संग अर्क ले जा-
न॥ ७५॥ खल शुभ कोई ग्रह तहं होय॥ अथवा तन-
पर दृष्टि जो होय॥ आयु सूत्मता ताकी कही॥ याकी
समता जानें यही॥ ७६॥ बड़े ज्योतिषन जो कुछ क-
हे॥ तिनके मन मैंने यह लहे॥ पुण्य वान जे जग में
जानि॥ आयु जो तिन की कही बखानि॥ ७७॥ पापी
नर जे जगत में तिनको नहिं परमान॥ पाप करे ते घ-
टैं सब आयु वीर्य धन हान॥ ७८॥ इति श्रीजातका-
लंकारे भाषा आयुर्दा नाम पंचमोऽध्यायः॥ ५॥ परै
लग्न पति धन भवन धन पति वपु अस्थान॥ होय-

अर्थे युत बुद्धि महि शुभ कृत कर्म निधान॥२॥ अंग
नाथ हो भ्रात घर भ्रात नाथ तनु गेह॥ भ्रात मात
निज कुल सबल मात्र पक्षि सों नेह॥ तुर्य्य ईश तन
सदन में तन पति सुख घर जाय॥ तात भ्रात सुमति
नर राज काज अधि काय॥३॥ करै आज्ञा गुरुन की
निज कुल अधिक सनेह॥ शील वान बुधि गुन सद-
न तामें लक्षण गेह॥ लग्न नाथ सुत सदन में सुत पति
तन अस्थान॥ ज्ञान वान महिमाऽधिक बुद्धि वान बलवान
लग्न ईश षष्ठम भवन षष्ठ नाथ तन धाम॥ व्याधि
हीन देही बली सून द्रव्य को नाम॥६॥ सप्तमेश तन
सदन में तनु पति सप्तम जाय॥ भूपाल तात निज ना
रि को सेवक कहिये ताय॥७॥ अंग नाथ अष्टम भ-
वन मृती ईश तनु गेह॥ चोर सूर जुआरी छली मृत्यु
भूप तेहि देह॥८॥ धर्म गेह में लग्न पति धर्म नाथ तन
थान॥ धर्म वान परदेश मति गुरु नेही नृप मान॥९
॥ कर्म नाथ तन गेह में कर्म थान तन ईश॥ लाभ भ-
वन शोभा रूप जुत गुरु सेवी अवनीश॥१०॥ परैं ल-
ग्न पति लाभ घर लाभ नाथ तन जाय॥ दीर्घ आ-
यु शुभ कर्म नृप चतुर संपदा आय॥११॥ लग्न र
नाथ द्वादश सदन रिष्फ नाथ तन धाम॥ सूम ही-
न मति सदै और द्रव्य नाश के काम॥१२॥ धन भा

ता माता तनुज अलि कलित्र मृति धर्म पिता लाभ और खर्च को जानो पंडित मर्म॥१३॥ जैसे अपनी लग्न ने अपनो फल लखि लेत तैसो तिन को फल कहो तिनके घरके नेत॥१४॥ इति श्री भाषा जातिकालंकारे भावाऽध्यायः॥६॥ अथ उच्च नीच रासि चक्रं

| सू | चं | मं | बु | बृ | भृ | श | रा | ग्रह |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | १० | ६ | ४ | १२ | ७ | ३ | उच्चस्थान |
| ७ | ८ | ४ | १२ | १० | ६ | १ | ९ | नीचस्थान |

॥अथ ग्रह स्वामी चक्र॥

| सू | चं | मं | बु | बृ | भृ | श | स्वा | मी | राशि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | ४ | १ | ६ | ९ | २ | १० | ० | ० | ० |
| ० | ० | ८ | ३ | १२ | ७ | ११ | ० | ० | ० |

॥अथ ग्रह मैत्री चक्रम्॥

| ग्रह | सू | चं | मं | बु | बृ | भृ | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मित्र | चं मं बृ | सू बु | सू. बृ चं | सू भृ | सू. मं चं | बु श | बु. भृ. |
| सम | बु. | मं बृ भृ श | भृ श | मं बृ श | श | मं बृ | बृ |
| शत्रु | भृ श | ० | बु. | चं. | बु भृ | सू. चं | सू. चं. मं. |

शुक्ल पक्ष की दूजतें दशमी तक शशि बाल॥ पुनि पांचें तक सतण औरयौ दश तक वृष भाल॥२॥ मावस पडुवा है दिना रहै चन्द्रमा छीन॥ ऐसे पंडित ज्योतिषी चन्द्र आयु कहि हीन॥३॥ जन्म लग्न तें षष्ठ तक हृष्य लग्न ये जानि॥ तातें द्वादश लग्न तक दृश्य अर्ध पहि चान॥४॥ मेष मकर वृष सिंघ पुनि मीन लग्न ये जानि॥ पृष्ठो दय संज्ञा यही पंडित लीजे मानि॥५॥ कुंभ मकर कन्या मिथुन उपचय संज्ञा येह॥ ज्योतिष के परिमान ते पंडित कही जुतेह॥५॥

॥ अथ ग्रह फलं॥ चौपाई॥ द्वाविंशत रवि वर्ष जानि॥ चार वीस पुनि चन्द्र बखानि॥ अष्टा विंशत कुज कह दीयो॥ द्वात्रिंशत् बुध को फल कीयो॥ षोडश वर्ष वृहस्पति जानों॥ तीस षष्टि शनि को पहिं चानों॥६॥ विंश पांच भृक्र की कही॥ राहु केतु व्याली से सही॥ मेष लग्न नवमें ग्रह होय॥ २ ताको स्वामी वल जुत होय॥ सो नर धरम करै अधिकाय॥ चौपायन सों चित्त लगाय॥८॥ जोये वृष नव में ग्रह जाय॥ ताको स्वामी बली बताय॥ काम धेनु को दान करावै॥ अधिक स्वधर्मी ताहि बतावै॥ मिथुन नवम ग्रह करै प्रकाश॥ स्वामी वल जुत जानों तास॥ ब्राह्मण भोजन नित्य करावै॥ दा

न दक्षिणा वहुत दिवावै॥कर्कलग्न नवमें जोथान॥
॥ताको स्वामी अति वल वान॥तीर्थ यात्रा करै नि-
दान॥गंग न्हाय देय वहु दान॥सिंह लग्न नवमें घर
होय॥ताको स्वामी अति वल जोय॥परम धर्म्ममें
हू उछुकरै॥ताते जियमें नांही डरै॥१२॥कन्या लग्न
नवम अस्थान॥स्वामी जासु होय वल वान॥पाषं-
ड धर्ममें रति वहु होय॥नेह करै युव तिन सों सोय॥
॥१३॥तुला लग्न धर्म गनह जानों॥वली होय निश्चै
जिय जानों॥करै दान विप्रन को सोई॥ताको अ
नुचित कर्म नहोई॥१४॥वृश्चिक करै राशि पाषंड॥
चपल देह वहु वस्त्र अखंड॥मकर धर्म निश्चै अ
तिकरै॥कुंभ वावरी कूआ जुसरै॥मीन लग्न कौं
ऐसा जानों॥ताल वावरी तहाँ पहि चानों॥१६॥
अथ इष्ट घटी बालक विचार॥चौपाई मे॥२
गई घरी ते आधी कीजे॥सूर्य्य नक्षत्र ते ये गिनि
लीजे॥गिनिते गिनिते आवे अंक॥सोई अगज
जानि निसंक॥आयु कर्म विद्या जो थन॥औरस
जस पर मान॥अवधि पहिले ही लिखत हैं॥नर
लिलाट में आन॥अथ योगिनी दशा॥
अश्वनी नक्षत्र को आदिलै जन्म नक्षत्र गिनि
लइ॥यामें तीन मिलाय के भाग आठ को देइ॥१॥

अथ ग्रह दृष्टि विचार ॥ पूरण दृष्टि शनीच्चर जा
ना॥ तीजे ३ दशवें १० चर परि मान ॥ नवम ९ पाचवें
५ गुरु की कही ॥ पूरण दृष्टि वाही मा यही ॥ अष्ट
म ८ चौथे ४ मंगल मानों ॥ ये पूरण दृष्टि सो का
हि जानों ॥ अथस्त्री पुरुष संज्ञाग्रह ॥
रवि अंगारक देव गुरु कहे पुरुष येतीन ॥ शुक्र का
ला निशि नारि जु बुध शनि क्लीव जु चीन ॥१॥
षष्ठा ष्टके वा नव पंचमेवा द्वि द्वादशे शङ्कस यो स्ति
ताबा ॥ एकाधि पत्ये भुवने समैत्री शुभाय पाति
ग्रहसं विधेयं ॥ दैवज्ञ वल्लभ ॥ लग्नाद्धि शैल वसु
रिष्फ गते विवाहे ॥ नेष्टोथ जन्मनि कुजे वर क
न्य योष्क ॥ कार्योथ वांछित फले सम धाम संस्थे ॥
तद्दृष्टिवा वर सुते पि गुणा धिकेवा ॥२॥ पित्रे
ग्रहे चेत कुच पुष्प संभवा तदानदोष प्रति शु
क्र संभव भर्ग गिरो वत्स वसिष्ठ काश्यपो त्री
णां भारद्वाज मुने कुले तथा ॥ इति बृहज्ज्ञातक ॥
सुत मदन नवान्त्य स्थे लग्नेषु शुभ युते मरणं
य सीत रश्मि ॥ भृगु सुत शशि पुत्र देव पूज्ये १
यदि वलि भियुतो विलोकि केतोवा ॥
अथ विंशोत्तरी दशा लगायवे की विधि ॥ छप्पय ॥
कातिका सूर्य्य षट् वर्ष रोहिणी शशि दश जानों ॥

॥भृगु मंगल कहि सात राहु शिव दश मानौं॥दिति
गुरू सोलह वर्ष पुष्य शनि कहि उनईषण॥सर्वे
बुद्ध की दशा वर्ष सत्रह सुख ईश मघा केतवर्ष
सात्त की पूर्वा भृगु विंशति कही॥क्रमि करि वि-
चार लोचन शिनो सु परासर मत से लही॥१॥२
अल्पायु दिन नाथ स्य शत्रो लग्ना धिपे यदि:॥
समत्ये मध्य मायुस्यात मित्रे पूर्णा युगार्द्धेन॥ ॥